भूमिका

हिंदी उपन्यास विधा का आरम्भ सामाजिक यथार्थ की वकालत करने वाली विधा के रूप में मुंशी प्रेमचंद से माना जाता है। जिन्होंने समाज के दबेकुचले वर्गों को अपने विषय क्षेत्र में सम्मिलित किया। जहाँ से विभिन्न वादों और विचारधाराओं से गुजरती हुई वर्तमान युग में जनप्रिय सशक्त विधा के रूप में उभर कर सामने आई। कह सकते हैं कि इस में आयामों का संयोजन है।

आज साहित्य के अपने वास्तविक स्वरूप का ही प्रतिफलन है कि प्रत्येक समाज अपनी-अपनी भूमिका में में अपनी उपस्तिथि दर्ज करवा रहा है। इस उपस्तिथि का ही प्रतिफलन विभिन्न प्रकार के विमर्शों का आगमन फैलाव और संयोजन है। जिनमें दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श अपनी विशिष्ट पहचान के साथ उपस्थित हो रहे हैं। सभी विमर्श व्यक्ति और समाज की अस्मितायुक्त चेतना और सुरक्षा से जुड़े प्रश्नों से सम्बन्ध जोड़े हुए हैं। साथ ही सामाजिक विद्रूपताओं को बहार निकल नव जागृति का सन्देश भी देते हैं। इन विमर्शों का प्रभाव है कि आज विभिन्न वर्ग प्रत्येक स्तर पर अपने अधिकारों के प्रति सचेत दिखाई देता है। आदिवासी विमर्श के उदय के पीछे कई लामबंध कारण ह। जिन्होंने अपनी प्रत्यक्ष-परोक्ष भूमिका निभाई। विस्थापन,भेदभाव भरा व्यवहार, सामाजिक और आर्थिक शोषण, भ्रांत धारणाएँ आदि प्रमुख है।

प्रत्येक समाज का अपनी जड़े इतिहास में खोजता-पाता है। इसी ऐतिहासिक संदर्भ के सहारे स्वयं को लोक को सम्मुख को प्रकट करता है। जहाँ अपने आरम्भिक स्वरूप की गहन छानबीन कर पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने का प्रयत्न करता है । ऐतिहासिक पृष्ठों में आदिवासी नायकों से जुड़े पृष्ठ ओझल है। इन्हीं ओझल पृष्ठों को सबके सामने लेन का प्रयास ही आदिवसी विमर्श के उदय का महत्वपूर्ण कारण है।

आदिवसी साहित्य की समृद्ध मौखिक परम्परा इसके आदिकाल से वर्तमान कल तक के अस्तित्व का सबूत देती है कि यह साहित्य नवीन नहीं बल्कि अनादिकाल से है। आलोचकों की राय में अदिवासी साहित्य अपनी लोक परम्परा में भाषिक आंचलिकता लिए प्राचीन काल से चला आ रहा है। कमी यह रही की इसे उचित स्थान नहीं दिया गया। अपनी अस्मिता की लड़ाई करती जनता को हाशिए पर धकेल दिया।

'धूणी तपे तीर में अभिव्यक्त आदिवासी आन्दोलन'विषयक अपने लघु शोध प्रबंध को कुल चार अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय में 'हरी राम मीणा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में लेखक महोदय के जीवन परिचय और साहित्यक अवदान को रेखांकित करने का प्रयास किया है। उनके बालपन में सगाई–विवाह जैसे सामाजिक रीति-रिवाजों के सहारे आदिवासी समाज की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट किया गया है। उन्होंने गरीबी में जीवन की जंग लड़ के भविष्य निर्माण की अकूत जिजीविषा के बदौलत किस प्रकार क्रमश: पदासीन होते हुए कैसे शानदार करियर बनाया। पुलिस जैसी भागमभाग नौकरी करते साहित्य के साथ कैसे तालमेल बिठाया। किस प्रकार लेखन हेतु समय निकालते और घर परिवार को भी संभालते। किस प्रकार विभिन्न स्थानों की यात्राओं को साहित्यक रचना में ढाला।

द्वितीय अध्याय 'धूणी तपे तीर में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना' में विवेच्य उपन्यास में समाहित विभिन्न स्तरों पर सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, व अन्य चेतना के संदर्भ मे राष्ट्रवादी चेतना, स्त्री चेतना और आर्थिक चेतना को उजागर करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय 'गोविन्द गुरु, आदिवासी समुदाय व मानगढ़ आन्दोलन' में गोविन्द गुरु का जीवन परिचय और उनके कार्यों का विश्लेषण किया गया है ।आदिवासी शब्द को अर्थ और परिभाषित करने का प्रयास किया है। मानगढ़ पहाड़ी पर घटित घटनाओं का विस्तार के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। साथ ही कारणों को भी।

चतुर्थ अध्याय 'मानगढ़ आन्दोलन पर लिखित अन्य साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन' में धूणी तपे तीर और मगरी मानगढ़ : गोविन्द गिरी उपन्यासों में विभिन्न स्तरों पर यथा सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक,धार्मिक और भाषाई आधार पर समानता और विषमता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। साहित्य समाज में दोनों लेखकों ने अपना अमूल्य योगदान दिया ।आदिवासी समाज के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आदि मूल्यों को भी समझाने का प्रयास किया है।

अपने संपूर्ण लघु शोध प्रबंध में आदिवसी समाज की विभिन्न स्थितियों को लेकर विभिन्न संदर्भों में विश्लेषित किया है । मानगढ़ पहाड़ी पर विभिन्न घटनाओं एक पीछे के कारणों को भी रेखांकित करने का मेरा प्रयास रहा है । इतिहास में यह घटना ओझल क्यूँ है। इसके पीछे के कारणों को भी दिखने का प्रयास किया गया। अंतिम अध्याय में दोनों रचनाओं में स्त्री की खुली सोच का पर्दा पास हुआ है। प्रेम की अठखेलियाँ खाती जवानी नंदू और कमली तथा बदली और गोंविद गुरु के माध्यम से घोटुल जैसी प्रथाओं को अप्रत्यक्ष रूप से दिखाने का प्रयास किया है। सामूहिकता ही आदिवासी समाज की मूल विशेषता है। लेकिन अंग्रेजी सरकार और रियासती शासक किस प्रकार उसे बिखेरने में लेगे हुए है। जिसे बचाने हेतु गोविन्द गुरु आदिवसी समुदायों को जागृत कर उनसे किस प्रकार लोहा लेते हैं। धूणी तपे तीर में समयोजित विभिन्न आंदोलनों को उजागर करना मेरे लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है और साथ ही साथ तुलनात्मक अध्ययन से पूज्य गोविन्द गुरु के पुनीत कर्मों उजागर करना भी रहा है । किसी भी रचना को अच्छी या बुरी बताना मेरा उद्देश्य नहीं रहा है। अंत में शोध उपलब्धियों का लेखाजोखा उपसंहार में अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में किया है ।

मैंने अपने शोध प्रबंधका सम्पूर्ण कार्य गुरुवर डॉ. अरविन्द सिंह तेजावत के श्री चरणों के सानिध्य में सम्पन्न किया। उन्होंने पग-पग पर आत्मीय भरा विश्वास देते हुए विषय चयन से लेकर लघु शोध प्रबंध के छपने तक विद्वतापूर्ण निर्देशन दिया और निराशा के पल में मेरा उत्साह वर्धन करते रहे और कार्य के प्रति एक नई उमंग जगाई। मैं उनके प्रति कृतज्ञमय

श्रद्धावनत हूँ और रहूँगा। डॉ.सिद्धार्थ शंकर राय व डॉ. अमित कुमार ने मेरे शोध विषय को संयत करने में पूर्ण सहयोग दिया। मैं उनके प्रति श्रद्धावनत आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को मूर्त रूप देने में एक पड़ाव हरीराम मीणा जी का भी आता है। उन्होंने अति व्यस्तता के बावजूद भेंटवार्ता हेतु मुझे स्नेहिल क्षण देकर मेरे दुरुह कार्य को विभिन्न प्रकार की सामग्री उपलब्ध करवाकर असान करने में अवर्णनीय सहयोग दिया ।मैं उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ।

मैं आभारी हूँ मेरे माता-पिता, भाई-बहिनों और अन्य परिजनों के प्रति जिन्होंने मुझे उच्च अध्ययन हेतु उचित वातावरण प्रदान किया। समय-समय पर मेरा होसला बढ़ाते रहे और मेरी अनुपस्थिति में समस्त कार्य स्वत: ही सम्पन्न किये।

हरियाणा केन्द्रीय विश्विद्यालय, महेद्रगढ़ के समस्त गुरुजनों राकेश मीणा, डॉ.स्नेहसता, रेणु गिल और समस्त कर्मचारीगण के प्रति भी मैं हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने समय समय पर मेरा पथ आलोकित करते हुए संबल प्रदान किया । मेरे बंधु-मित्र और सहयोगी डॉ.मुख्तियार अली, डॉ.तालीम अख्तर, डॉ. रविकांत सिंह, बजरंगलाल नवल का भी आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने मेरा जगह-जगह मार्गदर्शन किया।

हिंदी एवं अन्य सभी विभागों के वरिष्ठ शोधर्थियों, सहपाठियों और मित्रों ,विभिन्न संस्थाओं का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-परोक्ष सयोग प्रदान किया।

दिनाँक : **निर्मल पंवार**

हिंदी विभाग

हरियाणा केंद्रीय विश्विद्यालय, महेंद्रगढ़